अमिश कुमार

वर्षा जल की एक-एक बूंद को संरक्षित कर रहा है कनीना नगर पालिका भवन

गांव मोड़ी के खेतों में कार्यरत कृषकों ने मिसाल कायम करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि जल की एक-एक बूंद बहुमूल्य है। वर्षाजल तथा प्रतिदिन घरों से निकलने वाला जल नालियों द्वारा एक गहरे गड्ढे (कुंड) में जमा कर फसल, फल, सब्जी के उत्पादन के उपयोग में ले रहे हैं। 30 वर्ष पूर्व यह परियोजना प्रारम्भ हुई थी। वर्तमान में इसी जल से बेहतर किस्म के गेहूं का उत्पादन किया जा रहा है। विगत वर्षों से कीन्नू की बेहतर पैदावार लेकर किसानों ने कीन्नू का उत्पादन किया है। सब्जियां एवं फूलदार पौधे भी समय-समय पर उगाए जाते रहे हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर प्याज, बैंगन, गोभी, टमाटर, लौकी एवं तोरई आदि सब्जियों का उत्पादन भी किया गया है।

एक ओर जहां सरकार बूंद-बूंद जल की बचत करने पर बल दे रही है वहीं वर्षा जल संरक्षण के लिए भी अनेक कदम उठा रही है। इसी कड़ी में हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ का कनीना नगरपालिका भवन शत-प्रतिशत नियमों का पालन करते हुए वर्षा जल की एक-एक बूंद को संरक्षित कर रहा है। नगरपालिका का भवन परिसर 17,200 वर्ग फुट का है जिसमें से 5,100 वर्ग फुट पर भवन बना है जिसकी छतों का समस्त जल पाइपों द्वारा भूजल में पुनः पूरित हो जाता है। भवन के बाहर चारों कोनों पर चार रिचार्ज बोर बनाए गए हैं। छतों का जल पाइपों द्वारा इन पुनः पूरण बोरों की सहायता से भूजल में पुनः पूरित किया जाता है। वहीं भवन परिसर के खाली भाग को भी ढालदार बनाया गया है जिससे जल की यदि एक बूंद भी वर्षा आदि से प्राप्त होती है तो वह बहकर नालियों द्वारा भूजल में समाहित हो जाती है। सबसे बड़ी बात यह है कि नया भवन परिसर करीब 5 साल पहले निर्मित हुआ था और यह भवन सभी सुविधाओं से सम्पन्न है। वहीं वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए सभी आवश्यक कदम भी उठाए गए हैं। भवन में घरेलू उपयोगों जैसेः नहाने, हाथ-मुंह धोने आदि से निस्सरित जल भी फिल्टर होकर रिचार्ज बोर द्वारा भूजल में समाहित हो जाता है। नगरपालिका भवन 170 फुट लंबा तथा 30 फुट चौड़ा है तथा भवन में 220 फुट लंबा तथा 55 फुट चौड़ा खाली परिसर है। इसके मुख्य द्वार को ढलुवा बनाकर जल संरक्षण पर बल दिया गया है।

नगरपालिका अध्यक्ष सतीश जेलदार के कार्यकाल में यह भवन बनाया गया था। कनीना नगरपालिका का यह भवन बस स्टैंड के निकट एस. डी.एम. कार्यालय के समक्ष स्थित है। इसे हिसार की एक कंपनी ने निर्मित किया है। वर्ष 2018 में यह भवन बनकर तैयार हो गया था तथा 2020 में इसका उद्घाटन किया गया था। इस भवन को बनाते समय वर्षा के जल की प्रत्येक बूंद को संरक्षित करने का प्रयास किया गया है। छतों का ढलान इस प्रकार बनाया गया है कि भवन की छतों का जल चारों कोनों की ओर बहकर जाता है। दीवार के साथ-साथ पाइप ले जाए गए हैं जो सीधे रिचार्ज बोर में जाकर खुलते हैं ऐसे में जब भी वर्षा होती है तो वर्षाजल बहकर रिचार्ज बोर में चला जाता है।

भवन में एक बिजली की मोटर की सहायता से 400 फुट की गहराई से जल लेने के लिए एक बोरवेल स्थापित किया गया है जिससे जल को निकाला जाता है जो पीने तथा अन्य विभिन्न कार्यों में प्रयोग में लाया जाता है। इस भवन की यही सबसे बड़ी विशेषता है कि इसका खुला क्षेत्र ढालयुक्त बनाया गया है जिससे वर्षा का सारा जल बह करके नालियों के द्वारा रिचार्ज बोर में चला जाए। भूतल सहित तीन मंजिल का यह भवन देखने से ही मन मोह लेता है। वहीं इसकी सुविधाएं उत्तम दर्जे की हैं।

क्या हैं सरकार के दिशा-निर्देश

वर्तमान में सरकार द्वारा निर्देशित

किया गया है कि 500 वर्ग फुट से अधिक क्षेत्र में जो भी भवन बनाया जाएगा उसमें वर्षा जल संरक्षण की व्यवस्था की जाएगी। ऐसे में जो भी भवन बनाए जाते हैं उनमें इन्हीं नियमों का पालन किया जाना चाहिए।

क्या कहते हैं नगरपालिका प्रधान

नगरपालिका प्रधान सतीश जेलदार ने बताया कि उनके कार्यकाल में ही यह भवन बनकर तैयार हुआ है तथा इस भवन में वर्षा जल संरक्षण की सभी मूल सुविधाएं प्रदान की गई हैं। इस भवन में वर्षा जल की प्रत्येक बूंद रिचार्ज बोर में जाती है। ऐसे में यह भवन परिसर सरकार के दिशा निर्देशों के अनुसार बनाया गया है तथा शत-प्रतिशत वर्षा जल संरक्षण का एक बेहतरीन उदाहरण है।

जुलाई 2015 में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कनीना नगरपालिका के नये भवन के निर्माण को मंजूरी दे दी थी। तत्पश्चात वर्ष 2018 में वर्तमान एस.डी.एम. कार्यालय के समक्ष इस भवन की नींव रखी गई और तय समय अवधि में यह भवन बनकर तैयार हो गया था। यद्यपि निर्माण के बाद उद्घाटन के लिए यह भवन एक वर्ष से भी अधिक समय तक प्रतीक्षारत रहा किंतु वर्षाजल को रिचार्ज बोर में पहुंचाने का कार्य यह भवन निर्माण के दिन से ही करता आ रहा है।

आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण इस भवन के निर्माण में 4 करोड़ छह लाख रुपये खर्च हुए थे जिसमें प्राथमिकता जल संरक्षण, जल पुनर्भरण को दी गयी थी। इस प्रकार यह भवन न केवल वर्षाजल का संरक्षण करता है अपितु इस भवन के चारों कोनों पर करीब दो-दो हजार लीटर जल इकट्ठा करने के पक्के कूप बने हुये हैं जिनके बीच में बोर किया हुआ है। अधिक पानी खुद ही बोर के द्वारा भूमिगत जल में समाहित हो जाता है।

गुप्ता कंस्ट्रक्शन कम्पनी, हिसार के ठेकेदार तरुण गुप्ता ने इस भवन का निर्माण किया है। उन्होंने बताया कि सरकार की शर्त थी कि भवन में जल संग्रहण तंत्र स्थापित किया जाए।

वर्षा जल का कृषि में उपयोग

उन्होंने बताया कि भवन के फर्श में भी रेलिंग लगाकर सारा जल इकट्ठा कर रिचार्ज बोर तक पहुंचाने का प्रबंध किया हुआ है। इस प्रकार हजारों लीटर जल प्रतिवर्ष रिचार्ज बोर द्वारा भूजल में पुनःपूरित किया जा रहा है। भवन में स्थापित जल संग्रहण तंत्र प्रतिदिन लगभग एक हजार लीटर की दर से 3,65,000 लीटर वार्षिक जल को भूमिगत करने में सहायता करता है।

1995 को छोड़कर विगत 28 वर्षों में हुई औसत से कम वर्षा

हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ में लगातार भूजल स्तर गिरता जा रहा है। भूजल जो कभी 20 मीटर गहराई पर प्राप्त होता था वह अब लगभग 70 मीटर गहराई से प्राप्त हो रहा है। पूरे जिला महेंद्रगढ़ को ही डार्क जोन घोषित किया चुका है जिसमें कनीना कस्बा भी शामिल है। जहां भूमिगत जल की निरन्तर कमी होती जा रही है जो किसानों के लिए चिंता का विषय है। इस क्षेत्र में हर वर्ष भूजल स्तर गिरता जा रहा है।

कहने को तो कनीना क्षेत्र को बावनी अर्थात 52 हजार हेक्टेयर का स्वामी माना जाता है किंतु वर्तमान में लगभग 31 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में ही खेती की जाती है। यहां भूमिगत जल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है। दिनों-दिन जल का दोहन हो रहा है किंतु वर्षा से होने वाली जल की आपूर्ति घटती ही जा रही है। करीब 20 वर्षों में कनीना क्षेत्र में हुई वर्षा पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि वर्ष 1995 में अच्छी वर्षा हुई जबकि अन्य वर्षों में अल्प वर्षा हुई है।

वर्ष	वर्षा (मिमी.)	वर्ष	वर्षा (मिमी.)
1995	490	2009	189
1996	492	2010	304
1997	435	2011	196
1998	295	2012	326
1999	213	2013	259
2000	280	2014	219
2001	105	2015	221
2002	210	2016	235
2003	336	2017	230
2004	229	2018	243
2005	312	2019	229
2006	118	2020	238
2007	221	2021	246
2008	319	2022	235

(स्रोत खंड कृषि अधिकारी कार्यालय)

चिंतित हैं कृषि वैज्ञानिक

घटते भूजल स्तर के कारण जिला महेंद्रगढ़ के कृषि वैज्ञानिक डॉ. देवराज, डॉ. देवेंद्र, डॉ. मनोज आदि चिंतित हैं। इस संबंध में कृषि वैज्ञानिकों ने वर्ष 2014 से अब तक दौंगड़ा अहीर, सुरजनवास तथा कई गांवों में किसान शिविर लगाकर भविष्य में आने वाली जल समस्या के बारे में जानकारी दी है। तापमान, वायु, हिम, वर्षा में बदलाव के पीछे सूर्य की ऊष्मा में परिवर्तन, महासागरों के जल प्रवाह में परिवर्तन, जीवाश्मी ईंधन का अधिक जलाना, वनों की कटाई, शहरों के आस-पास अंधाधुंध भवन निर्माण, जल का अत्यधिक दोहन आदि ग्रीन हाउस प्रभाव के प्रमुख कारण माने जा रहे हैं जिसके कुप्रभावों में पृथ्वी का अधिक गर्म होना, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, वर्षा जल की मात्रा में परिवर्तन, अधिक कार्बनडॉइआक्साइड के कारण उगने वाली पौधों की प्रजातियों में प्रभाव प्रमुख हैं।

कनीना क्षेत्र में कृषि विभाग एवं कृषि वैज्ञानिकों के जागरूकता शिविरों के परिणामस्वरूप किसान जल संरक्षित करने लगे हैं तथा वर्षा जल संरक्षण पर ध्यान देने लगे हैं। जिला प्रशासनिक

अधिकारियों ने भी प्रत्येक घर में वर्षा जल संरक्षण के लिए एक-एक हौदी बनाने की शिक्षा दी थी जिस पर अमल भी हुआ है। कनीना में एक दर्जन से भी अधिक घरों में वर्षा जल संरक्षण के लिए हौदी बनायी गयी हैं।

कृषि है मुख्य आधार

इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। कृषि मानसून पर निर्भर करती है किंतु जलवायु में होने वाले परिवर्तनों से भारतीय अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वैश्विक ऊष्णता से होने वाले प्रभावों से देश की खाद्य उत्पादकता 40% तक कम हो रही है, तापमान में $1^{\circ}C$ परिवर्तन से गेहूं की पैदावार 50 लाख टन तक कम हो जाती है, जिससे किसानों की आजीविका पर कुप्रभाव पड़ता है, हिमनद पिघलने लग जाता है, मछली, पशु एवं समुद्री जीवों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ता है। कनीना क्षेत्र के लोगों में वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जल के दुरूपयोगों के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा किसानों द्वारा जल संरक्षण के लिए प्रभावी उपाय अपनाने पर बल दिया जा रहा है।

क्या कहते हैं कृषि वैज्ञानिक

पूर्व कृषि वैज्ञानिक डॉ. देवराज यादव का कहना है कि वे किसानों को शिविर लगाकर समझा रहे हैं कि वर्षा की कमी या प्रतिकूल स्थिति होने के क्या कारण है जिसके समाधान के लिए किसान महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि भूमिगत जल स्रोतों को पुनः प्रभावी करके, सिंचाई के लिए आधुनिक मशीनों एवं तकनीकों को अपनाकर, कृषि पैदावार में वृद्धि की जा सकती है। साथ ही उन्होंने यह भी बताया है कि धान व गेहूँ के अवशेषों को जलाना नहीं चाहिए। उनके अनुसार अधिक से अधिक वृक्षारोपण, ऊर्जा के नवीनीकृत तकनीकों के प्रयोग, फसलों में रासायनिक पदार्थों का न्यूनतम प्रयोग, गोबर गैस के प्रयोग, खान-पान की आदतों में बदलाव, भूजल के कम दोहन, फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई द्वारा घटते भूजल स्तर को कम किया जा सकता है।

वर्षा जल तथा प्रतिदिन घरों से निकलने वाले जल को एकत्र कर उसका सब्जी तथा फसलों में किया जा रहा है उपयोग

गांव मोड़ी के खेतों में कार्यरत कृषकों ने मिसाल कायम करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि जल की एक-एक बूंद बहुमूल्य है। वर्षाजल तथा प्रतिदिन घरों से निकलने वाला जल नालियों द्वारा एक गहरे गड्ढे (कुंड) में जमा कर फसल, फल, सब्जी के उत्पादन के उपयोग में ले रहे हैं। 30 वर्ष पूर्व यह परियोजना प्रारम्भ हुई थी। वर्तमान में इसी जल से बेहतर किस्म के गेहूं का उत्पादन किया जा रहा है। विगत वर्षों से कीन्नू की बेहतर पैदावार लेकर किसानों ने कीन्नू का उत्पादन किया है। सब्जियां एवं फूलदार पौधे भी समय-समय पर उगाए जाते रहे हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर प्याज, बैंगन, गोभी, टमाटर, लौकी एवं तोरई आदि सब्जियों का उत्पादन भी किया गया है।

24 सदस्यों की इस ढाणी में छह घर शामिल हैं और प्रतिदिन करीब 2000 लीटर जल इस कुंड में जमा हो जाता है। जब वर्षा होती है तो सभी घरों का वर्षा जल भी पाइपों एवं नालियों से होता हुआ इस कुंड में जमा हो जाता है। दस वर्ष पहले इस जल का उपयोग भूजल पुनःपूरण में किया जा रहा था। कुंड के जल को रस्सी एवं बाल्टी की बजाय वर्तमान में सोलर मोटर से निष्कासित किया जाता है। वर्तमान में उन्होंने किन्नू, टमाटर, मिर्च, बैंगन आदि सब्जियों एवं फलों का उत्पादन भी किया है।

उद्देश्य

ढाणी के निवासी एवं पूर्व सरपंच गजराज सिंह बताते हैं कि करीब 10 वर्ष पहले कृषि विभाग के एक अधिकारी की सलाह पर ढाणी के सभी घरों की छतों से एकत्रित जल को नालियों द्वारा घरों के निकट बने एक कुंड तक पहुंचाया जाने लगा। इस जल को भूजल पुनःपूरण के उपयोग में लाया जा रहा था। कुंड में ही बोर करवाया हुआ था ताकि सभी घरों का वर्षा जल इस कुंड में आए और बोर के जरिये भूमि में पानी चला जाए लेकिन धीरे-धीरे इस बोर ने कार्य करना बंद कर दिया और जल कुंड में जमा होने लग गया। ढाणी के सभी लोगों ने एक मिसाल कायम की जब ढाणी के सतीश कुमार ने उन को सलाह दी कि सभी घरों से प्रतिदिन पशुओं को नहलाने, बर्तन धोने आदि से जो भी अनुपयुक्त जल निकलता है उसको भी नालियों द्वारा इसी कुंड में जमा किया जाए ताकि विभिन्न कार्यों में इसका उपयोग हो सके। फिर क्या था सभी लोगों ने इस जल को नालियों द्वारा एक कुंड में जमा करना शुरू कर दिया। यह कुंड करीब 6 मीटर गहरा है जिसमें एकत्रित जल को सोलर मोटर की सहायता से निष्कासित कर सिंचाई, सब्जी एवं फल उगाने के काम में ले रहे हैं। 3 हार्स पावर की मोटर पर करीब 42 हजार रुपये का खर्च आया है। दिन के किसी भी समय मोटर को चलाकर कुंड के जल को निकालकर सब्जी उत्पादन में प्रयोग कर रहे हैं। इससे बिजली की बचत भी हो रही है। इस प्रकार एक बूंद जल भी व्यर्थ जाने से बच रहा है। 1990 में जो वर्षा जल संरक्षण विधि अपनाई गई और अब समस्त ढाणी का जल एकत्र कर उपयोग में लेने की जो विधि अपनाई जा रही है, यह ढाणी गांव या दूसरे लोगों के लिए एक उदाहरण है।

वर्षा ऋतु से पूर्व सभी व्यक्ति अपने घर की छतों तथा नालियों को साफ करते हैं जिससे वर्षा जल इन नालियों से होता हुआ कुंड में जमा हो जाए। कुंड के घरों से जुड़ा होने के कारण घरों से निकलने वाला जल भी इसमें एकत्र हो जाता है। गजराज सिंह को सरकार द्वारा सकारात्मक सोच के चलते कई बार फल, सब्जी उत्पादन, वर्षा जल संरक्षण आदि क्षेत्रों में सम्मानित किया जा चुका है तथा उन्हें अग्रणी किसान माना जाता है।

क्या कहते हैं कृषि वैज्ञानिक

नारनौल के पूर्व कृषि वैज्ञानिक डॉ. देवराज तथा रेवाडी के जिला बागवानी अधिकारी डॉ. मंदीप यादव का कहना है कि मोड़ी गांव की यह ढाणी जल संरक्षण, वर्षा जल संरक्षण, भूजल पुनःपूरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे फल एवं सब्जियों का बेहतर उत्पादन हो पाएगा वहीं भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होगी। उनसे अन्य किसानों को शिक्षा लेनी चाहिए।

लंबे समय से कर रहे हैं किसान जल संरक्षण

हरियाणा का नाम आते ही याद आती है भगवान् श्री-कृष्ण के कर्म स्थल की। जहां भगवान् श्री कृष्ण ने आकर गीता का उपदेश दिया वही क्षेत्र हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध है। इस हरियाणा के दक्षिण भाग में महेंद्रगढ़, रेवाड़ी तथा भिवानी जिले आते हैं जहां की पृष्ठभूमि राजस्थान से मिलती जुलती है।

दक्षिण हरियाणा में जल की भारी कमी है। जहां क्षेत्र का जल स्तर पहले ही दिनों-दिन गिरता जा रहा है वहीं इस क्षेत्र में भूजल का दोहन बहुत तेजी से हो रहा है। महेंद्रगढ़ जिले के कुछ क्षेत्रों में तो भूजल समाप्त हो जाने के कारण पेयजल की विकराल समस्या बनी हुई है।

जल संरक्षण के लिए सम्पूर्ण विश्व

हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ में लगातार भूजल स्तर गिरता जा रहा है। भूजल जो कभी 20 मीटर गहराई पर प्राप्त होता था वह अब लगभग 70 मीटर गहराई से प्राप्त हो रहा है। पूरे जिला महेंद्रगढ़ को ही डार्क जोन घोषित किया चुका है जिसमें कनीना कस्बा भी शामिल है। जहां भूमिगत जल की निरन्तर कमी होती जा रही है जो किसानों के लिए चिंता का विषय है। इस क्षेत्र में हर वर्ष भूजल स्तर गिरता जा रहा है।

में एक अभियान छेड़ा हुआ है और इस आहुति में कई संस्थाएं अपना योगदान दे रही हैं। सरकारी या गैर सरकारी संस्थाएं मिलकर वर्षा जल तथा भूमिगत जल के संरक्षण के लिए कई कार्यक्रम चला रही हैं।

सरकारी स्कूल

इस क्षेत्र में दिनों-दिन भूमिगत जल संकट गहराता जा रहा है और वर्षा भी कम होती है। गर्मी के दिनों में तो जल की भारी कमी हो जाती है और त्राहि-त्राहि मच जाती है। आज पूरा विश्व जल संरक्षण के लिए प्रयासरत है। जल संरक्षण के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं जो कागजों तक ही सिमटकर रह जाते हैं। किंतु सरकारी संस्थान ठीक उसके विपरीत इस जल के संरक्षण के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। वर्षा जल को संरक्षित करने व उस जल को भूमिगत जल में समाहित करने के लिए महेंद्रगढ़ जनपद के कनीना के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विशिष्ट प्रयास किए जा रहे हैं।

विद्यालय में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए सम्पूर्ण स्कूल प्रशासन, इको क्लब अध्यक्ष, शिक्षा अधिकारी प्रयासरत हैं और वर्षा के जल को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। उनका कहना है कि अगर इंसान इस सत्य को समझ जाए कि जल दिनों-दिन कम हो रहा है और इस दिशा में प्रयास करे तो निःसंदेह एक न एक दिन सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

संग्रहित जल से कृषि उत्पादन

वर्षा का जल जो छतों पर गिरता है उसे एकत्रित करके एक बोर में डाल दिया जाए तो एक अच्छी मात्रा में जल का संरक्षण किया जा सकता है। इसी प्रयास को सफल बनाने में कनीना का राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अग्रणी है। इस विद्यालय की सभी छतों का जल एक पक्के नाले में गिरता है। इस नाले के जल से कहीं-कहीं बड़े पौधों को सिंचित करने का प्रबंध भी किया हुआ है किंतु अधिकांश जल इकट्ठा होकर एक बड़े टैंक में गिरता है जिससे इस टैंक में किए गए बोर के माध्यम से यह जल भूमि में रिसकर भूमिगत जल में समाहित हो जाता है। इस क्षेत्र में विज्ञान विषय के अध्यापक एच.एस. यादव जो इको क्लब के अध्यक्ष भी रहे हैं, न केवल इको क्लब के माध्यम से इस नाले की साफ सफाई रखवाते हैं अपितु छतों को भी साफ सुथरा करवाते है जिससे वर्षा का सम्पूर्ण जल नाले में आ गिरे। इस नाले का समूचा जल बहकर एक कुंड में गिरता है। इस कुंड को वर्षा होने से पहले स्वयं साफ करवा देते हैं। इस कुंड की गहराई आठ फुट है। इस कुंड के बीच में एक बोर किया हुआ है जहां तीन फुट का पाइप लगा दिखाई पड़ता है।

पूर्व प्राचार्य वेदप्रकाश यादव ने बताया कि चार फुट के वर्गाकार कुंड में बोर की हुई पाइप करीब तीन फुट ऊंची है तथा इसका निचला सिरा भूमिगत जल से मिला हुआ है। वर्षा का गंदा जल जब कुंड में गिरता है तो वो सीधा भूमिगत जल से नहीं मिलता है अपितु कुंड में खड़े तीन फुट ऊंचे पाइप से छनकर पाइप के द्वारा भूमिगत जल में समाहित होता है। कई वर्षों से इस विधि से वर्षा के जल का न केवल संरक्षण अपितु उसका उपयोग करते हुए बेहतर इको क्लब वाटिका का निर्माण किया हुआ है।

यदि वर्षा के इस जल संरक्षण की समूची कार्यप्रणाली को समझा जाए और अन्य सभी शिक्षण एवं गैर शिक्षण संस्थानों द्वारा इसे अपनाया जाए तो भूजल के दोहन को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस कार्य में सबसे बड़ी चुनौती कूड़ा कचरा है। आंधी तथा पतझड़ के कारण प्रत्येक वर्ष वर्षा जल को निर्धारित स्थान तक ले जाने वाला यह नाला जाम हो जाता है जिसे हर वर्ष साफ करवाना पड़ता है। यही हालात छतों की भी है। अगर छत साफ सुथरी नहीं होंगी तो वर्षा का जल इस नाले में कम गिर पाएगा। प्राचार्य ने सारी जिम्मेदारी इको क्लब के अध्यक्ष एच. एस. यादव को दी हुई थी।

इस कार्य की यूं तो सभी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं किंतु सभी अपने घरों में इस विधि को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्षा के जल के छतों से नाले में गिरने के बाद दो स्थानों में छेद किए हुए हैं जिससे कुछ जल बड़े पौधों में चला जाता है। इस प्रकार इको क्लब की एक सुंदर वाटिका का निर्माण किया हुआ है जिसमें नीम, अर्जुन, घास के मैदान, सेमल के पेड़ लगे हुए हैं। फूलदार एवं अन्य औषधीय पौधे भी इस वाटिका में लगे हुए हैं। ये पौधे एवं घास का लॉन वास्तव में एक दर्शनीय स्थल हैं।

कनीना के राजकीय मॉडल स्कूल, नगरपालिका कनीना तथा मोड़ी में वर्षा जल संरक्षण को आदर्श मानकर लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए जिससे वे जल संरक्षण में योगदान दे सकें। ताकि भविष्य में जल संकट कम गहरा पाए और जल की बचत हो सके। वहीं इस प्रकार के कार्य में आगे आकर अपना योगदान देने वालों को सम्मानित भी किया जाना चाहिए।

संपर्क करें:

अमिश कुमार,

मोहल्ला-मोदीका, वार्ड नं. 01,

कनीना-123 027

जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

मो. 9416348400